



सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट के पानी से खेती, बागवानी करें

► साफ-सुथरे पानी का प्रयोग करने से बचें नई तकनीक से पर्यावरण को बचाने में मदद मिलेगी

खेतीखान

कानपुर। ताजे पानी के उपयोग को कम करने के प्रयास में, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर ने सिंचाई और बागवानी उद्देश्यों के लिए ट्रीटेड सीवेज के पानी का उपयोग किया है। संस्थान ने ड्यूविंग बेड बायो रिएक्टर टेक्नोलॉजी के आधार पर अपनी कॉलोनी और कार्यालय भवनों के सीवेज के उपचार के लिए एक सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट चालू किया। इस संयंत्र से प्राइमरी ट्रीटमेंट के बाद निकलने वाले ट्रीटेड सीवेज को मल्टी ग्रेड फिल्टर और एक्टिव कार्बन फिल्टर के माध्यम से आगे उपचारित किया जाता है ताकि इसे बागवानी और सिंचाई उद्देश्यों के लिए उपयुक्त बनाया जा सके।

खेत के मैदान को हवा-भा करने में मदद लेंगे
शुरु में हमने इसे अपने खेल मैदान और



प्रायोगिक फार्म के लिए उपयोग करने का लक्ष्य रखा है, नरेंद्र मोहन, निदेशक ने कहा। हम गन्ने की उत्पादकता और गुणवत्ता पर उपचारित सीवेज के उपयोग के किसी भी प्रभाव का आकलन करने का भी प्रयास करेंगे। यद्यपि उपचारित सीवेज की गुणवत्ता यथा वीओडी, सीओडी और पीएच आदि मानदंडों के अनुरूप है, फिर भी हम ओजोन के साथ उपचार के एक अतिरिक्त कदम को शामिल करके इसे और बेहतर बनाने की योजना बना रहे हैं। जूफिक, चीनी कारखानों और डिस्टिलरी में आवासीय परिसर भी हैं, अब संस्थान के विशेषज्ञों के इन इकाइयों के दौरे के दौरान, उन्हें ऐसी इकाइयों की स्थापना के लिए आवश्यक सलाह प्रदान की जा रही है ताकि पर्यावरण के मुद्दों को संबोधित किया जा सके और सिंचाई, बागवानी, शौचालय फ्लशिंग या अन्य अप्रत्यक्ष उपयोग के लिए पानी की बचत हो सके, नरेंद्र मोहन, निदेशक ने सूचित किया।



Director, Department of Food & Public Distribution Dharendra Kumar, visited National Sugar Institute for inspection on Monday.

Team visits National Sugar Institute

PHS ■ KANPUR

A team from Ministry of Consumer Affairs, Food & Public Distribution, New Delhi led by Dharendra Kumar, Director, Department of Food and Public Distribution visited National Sugar Institute (NSI) to observe compliance of instructions of the ministry for maintaining cleanliness in the institute premises. The team carried out inspection of the academic area, office, hostels and residential buildings and expressed satisfaction over the efforts being made by the institute in maintaining cleanliness and ensuring proper sanitation.

Senior Administrative Officer Brajesh Kumar Sahu gave details about various efforts made by the institute, including procurement of sweeping and sanitisation machines, contactless sanitiser and soap dispensing systems. Nodal Officer for Swachhta Mission Ashok Garg gave details to the team about 'swachhta' (cleanliness) awareness

programmes organised by the institute in local primary schools, public places and also about distribution of sanitisers, masks and other sanitary items from time to time. Kumar mooted that the institute should continue maintaining the pace of cleanliness drive and to adopt innovative techniques for further improvement in cleanliness. He also suggested that special lectures on the aspect of cleanliness may also be organised for educating the students further by inviting outside experts. He also distributed towels to the contractual workers engaged in such activities.

Meanwhile the NSI in a bid to reduce fresh water usage had resorted to the use of treated sewage for irrigation and horticulture purposes. The institute commissioned a Sewage Treatment Plant (STP) for treatment of sewage for its colony and office buildings based on 'Moving Bed Bio Reactor Technology'. The outlet from this plant was

further treated through multigrade filter and active carbon filter to make it suitable for horticulture and irrigation purposes.

Director, NSI, Prof Narendra Mohan said initially the institute had aimed at using it for sports ground and experimental farms and shall also try to assess any impact of use of treated sewage on sugarcane productivity and quality. He said although the quality of treated sewage was conforming to norms as reflected from the values of BOD, COD and pH etc, yet NSI was planning to improve it further by incorporating an additional step of treatment with ozone. He said since sugar factories and distilleries also have residential complexes now during the visit of institute experts to these units, necessary advice was being provided to them for establishing such units so as to address environmental issues and saving water for irrigation, horticulture, toilet flushing or for other indirect usage.

सिंचाई और बागवानी में ट्रीटेड सीवेज के पानी का उपयोग

■ शुरुआत में खेल मैदान और प्रायोगिक फार्म के लिए उपयोग करने का लक्ष्य-निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन

कानपुर, 16 मई। ताजे पानी के उपयोग को कम करने के प्रयास के चलते राष्ट्रीय शर्करा संस्थान ने सिंचाई और बागवानी उद्देश्यों के लिए ट्रीटेड सीवेज के पानी का उपयोग किया। संस्थान ने मूविंग बेड बायो रिएक्टर के आधार पर अपनी कॉलोनी और कार्यालय भवनों के सीवेज के उपचार के लिए सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट चालू किया। इस संयंत्र में प्राइमरी ट्रीटमेंट के बाद निकलने वाले ट्रीटेड सीवेज को मल्टी ग्रेड फिल्टर और एक्टिव कार्बन फिल्टर के माध्यम से आगे



निरीक्षण करते निदेशक प्रो नरेंद्र मोहन व अन्य।

■ एनएसआई में सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट चालू

उपचारित किया जाता है ताकि इसे बागवानी और सिंचाई उद्देश्यों के लिए उपयुक्त बनाया जा सके। एनएसआई कानपुर के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने कहा कि शुरुआत में

खेल मैदान और प्रायोगिक फार्म के लिए उपयोग करने का

भी स्वच्छ बना रहे। सिंचाई, बागवानी, शौचालय फ्लशिंग या अन्य अप्रत्यक्ष उपयोग के लिए पानी की बचत हो सके।

लक्ष्य रखा है। हम गन्ने की उत्पादकता और गुणवत्ता पर उपचारित सीवेज के उपयोग के किसी भी प्रभाव का आकलन करने का भी प्रयास करेंगे। यद्यपि उपचारित सीवेज की गुणवत्ता यथा बीडीओ, सीडीओ और पीएच आदि मानदंडों के अनुरूप है। फिर भी हम ओजोन के साथ उपचार के एक अतिरिक्त कदम को शामिल करके इसे और बेहतर बनाने की योजना बना रहे हैं। चूंकि चीनी कारखानों और डिस्टिलरी में आवासीय परिसर भी हैं। अब संस्थान के विशेषज्ञों के

इन इकाइयों के दौर के दौरान उन्हें एसी इकाइयों की स्थापना के लिए आवश्यक सलाह प्रदान की जा रही है ताकि पर्यावरण

ताजे पानी का उपयोग कम करने को उपचारित सीवेज से कर रहे सिंचाई

कानपुर (एसएनबी)। ताजे पानी का उपयोग कम करने को लेकर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान ने अपने परिसर के सीवेज के गंदे पानी को उपचारित कर बागवानी व खेती में सिंचाई कार्य में उसका उपयोग करना शुरू किया है। इस प्रयोग से उत्साहित संस्थान के वैज्ञानिक चीनी कारखानों व डिस्टिलरी को भी अपने परिसर में ऐसी इकाइयों को स्थापना के लिए सलाह दे रहे हैं। संस्थान निदेशक प्रो.नरेंद्र मोहन का कहना है कि सीवेज के उपचारित पानी का उपयोग सिंचाई, बागवानी, शौचालय फ्लशिंग व अन्य अप्रत्यक्ष उपयोग वाले कार्यों में कर ताजे पानी को बचा पर्यावरण संरक्षण में भी मददगार बना जा सकता है।

शर्करा संस्थान में 'मूविंग बेड बायो रिएक्टर टेक्नोलॉजी' के आधार पर अपनी कॉलोनी और कार्यालय भवनों के सीवेज उपचार के लिए एक सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट



राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में सीवेज को उपचारित कर सिंचाई कार्य में पानी के उपयोग के लिए लगाये गये संयंत्र का अवलोकन करते निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन।

फोटो : एसएनबी

चालू किया है। इस संयंत्र से प्राइमरी ट्रीटमेंट के बाद निकलने वाले ट्रीटेड सीवेज को मल्टी ग्रेड फिल्टर और एक्टिव कार्बन फिल्टर के माध्यम से आगे उपचारित किया जाता है, ताकि इसे बागवानी व सिंचाई

चीनी कारखानों व डिस्टिलरीज को कर रहे संयंत्र स्थापना के लिए प्रेरित

उद्देश्यों के लिए उपयुक्त बनाया जा सके।

निदेशक प्रो.नरेंद्र मोहन ने बताया कि शुरू में हमने इसे अपने खेल मैदान और प्रायोगिक फार्म के लिए उपयोग करने का लक्ष्य रखा है। हम गन्ने की उत्पादकता और गुणवत्ता पर उपचारित सीवेज के उपयोग के किसी भी प्रभाव का आकलन करने का प्रयास भी करेंगे। उन्होंने कहा कि उपचारित सीवेज पानी की गुणवत्ता यथा बीओडी, सीओडी और पीएच आदि मानदंडों के अनुरूप ही है, फिर भी हम ओजोन के साथ उपचार के एक अतिरिक्त कदम को शामिल करके इसे और बेहतर बनाने की योजना बना रहे हैं।

बागवानी उद्देश्यों के लिए ट्रीटेड सीवेज के पानी का उपयोग किया

कानपुर (नगर छाया समाचार)।

ताजे पानी के उपयोग को कम करने के प्रयास में, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर ने सिंचाई और बागवानी उद्देश्यों के लिए ट्रीटेड सीवेज के पानी का उपयोग किया है। संस्थान ने मूविंग बेड बायो रिएक्टर टेक्नोलॉजी के आधार पर अपनी कॉलोनी और कार्यालय भवनों के सीवेज के उपचार के लिए एक सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट चालू किया। इस संयंत्र से प्राइमरी ट्रीटमेंट के बाद निकलने वाले ट्रीटेड सीवेज को मल्टी ग्रेड फिल्टर और एक्टिव कार्बन फिल्टर के माध्यम से आगे उपचारित किया जाता है ताकि इसे बागवानी और सिंचाई उद्देश्यों के लिए उपयुक्त बनाया जा सके।

शुरू में हमने इसे अपने खेल मैदान और प्रायोगिक फार्म के लिए उपयोग करने का लक्ष्य रखा है, श्री नरेंद्र मोहन, निदेशक ने कहा। हम गन्ने की उत्पादकता और गुणवत्ता पर उपचारित सीवेज के उपयोग के किसी भी प्रभाव का आकलन करने का भी प्रयास करेंगे। यद्यपि उपचारित सीवेज की गुणवत्ता यथा बीओडी, सीओडी और



पीएच आदि मानदंडों के अनुरूप है, फिर भी हम ओजोन के साथ उपचार के एक अतिरिक्त कदम को शामिल करके इसे और बेहतर बनाने की योजना बना रहे हैं।

चूंकि, चीनी कारखानों और डिस्टिलरी में आवासीय परिसर भी हैं, अब संस्थान के विशेषज्ञों के इन

इकाइयों के दौरे के दौरान, उन्हें ऐसी इकाइयों की स्थापना के लिए आवश्यक सलाह प्रदान की जा रही है ताकि पर्यावरण के मुद्दों को संबोधित किया जा सके और सिंचाई, बागवानी, शौचालय फ्लशिंग या अन्य अप्रत्यक्ष उपयोग के लिए पानी की बचत हो सके, श्री नरेंद्र मोहन, निदेशक ने सूचित किया।

सीवेज के पानी को बनाया सिंचाई योग्य

कानपुर। नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) सिंचाई और बागवानी के लिए सीवेज के पानी का उपयोग कर रहा है। एनएसआई की कॉलोनी और कार्यालय भवनों के सीवेज के पानी को उपचारित करने के लिए मूविंग बेड बायो रिएक्टर टेक्नोलॉजी अपनाई गई है। इस संयंत्र से प्रारंभिक शोधन के बाद निकलने वाले सीवेज को मल्टी ग्रेड फिल्टर और एक्टिव कार्बन के माध्यम से उपचारित किया गया। इससे पानी बागवानी और सिंचाई के लिए उपयुक्त हो गया। इंस्टीट्यूट के निदेशक प्रोफेसर नरेंद्र मोहन ने बताया कि अब इस शोधित पानी को ओजोन के साथ उपचारित करके और बेहतर बनाने की योजना बना रहे हैं। चीनी कारखानों, डिस्टिलरियों को भी सीवेज ट्रीटमेंट इकाइयों की स्थापना के लिए सलाह दी जा रही है। (ब्यूरो)